अध्याय - प्रथम

प्रस्तावना

1.0 प्रस्तावना :-

'ज्ञान तृतीय मनुजष्यस्य नेत्र' वैदिक काल से ही शिक्षा को वह प्रकाश माना गया है जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रकाशित करने की सामर्थ्य रखता है इसलिए विद्वानों ने शिक्षा कों तीसरा नेत्र कहा है। महाभारत काल के अनुसार शिक्षा के समान कोई ज्योति नहीं है। शिक्षा द्वारा प्राप्त प्रकाश अज्ञान को दूर कर जीवन के वास्तविक मूल्यों को समझने का सामर्थ्य देता है। अपने विस्तृत अर्थ में शिक्षा का तात्पर्य आत्मसंस्कार, आत्मोन्नति सें है जो कि आयुपर्यन्त चलने वाला तथ्य है। "यावज्जीवमधीतेविप्रा:" क्योंकि व्यक्ति की निपुणता में उसके आत्मानुभवों का हाथ ही सर्वोपरि होता है । परन्तु आज शिक्षा शब्द का प्रयोग अत्यन्त संकुचित अर्थ में किया जाता है। आज शिक्षा का अर्थ अधिकतम अंको के साथ परीक्षाएँ उत्तीर्ण करना ही रह गया हैं विद्या के नाम पर आज विद्यार्थी दिन-प्रतिदिन अविद्या के घोर अन्धकार में धकेले जा रहे है। आज विद्यार्थियों के साथ जुड़ी हुई सारी समस्याये उश्रृंखलता, उदण्डता, अनुशासनहीनता शिक्षा के वास्तविक स्वरुप को भुला देने का ही परिणाम है।

यह कलिकाल की विडम्बना ही कही जायेगी कि जो विद्या या शिक्षा स्वान्त: सुखकारी, दुखहरिद्दयहरिणी, सन्तोषमृतदात्री एवं मनोमल हारिणी होनी चाहिए थी। सम्प्रति इसके विपरीत परिणाम दिखा रही है। शिक्षा से सम्पूरित चित्तों में आज सन्तोष के स्थान पर विलासिता नृत्य कर रही है। शिक्षित व्यक्ति अशिक्षित की अपेक्षा आज अधिक धूर्त, पाखण्डी, छली तथा मानसिक दृष्टि से तनावग्रस्त दिखाई दे रहा है। विश्व का पूंजीभूत असंतोष आज मानो शिक्षा के क्षेत्र में ही सिमट कर रह गया है। ऐसी स्थिति में प्रत्येक चिन्तनशील व्यक्ति यह धारणा बनाने के लिए विवश हो जाता है कि ऐसी शिक्षा से अशिक्षित ही ठीक है ।

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि :-

किसी भी राष्ट्र के उन्नति के पथ पर ले जाने में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से व्यक्ति के व्यक्तित्व में निखार आता है और अपने व्यक्तित्व में समाहित गुणों के माध्यम से व्यक्ति समाज राष्ट्र को उन्नतिशील बनाता है। दूसरे शब्दों मे यहा कहा जा

सकता है कि जिस शिक्षा को ग्रहण कर मनुष्य स्वयं राष्ट्र का और समाज का उत्थान करें तथा इसके माध्यम से जीविकोपार्जन करे, इसी में शिक्षा की सार्थकता है।

शिक्षा मनुष्य के जीवन का महत्वपूर्ण लक्ष्य होने के साथ-साथ वांछनीय लक्ष्यों की पूर्ति का एक उपयोगी साधन भी है यह व्यक्ति के व्यक्तित्व व बुद्धि का विकास कर, उसे आर्थिक, राजनीतिक व सांस्कृतिक कार्यों को सम्पन्न करने के योग्य बनाती है। शिक्षा को एक ऐसे उपकरण के रुप में भी मान्यता दी गयी है, जिसकी सहायता से समाज में परिवर्तन व विकास के अभीष्ट लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

तनाव या प्रतिबल आधुनिक समाज की एक बड़ी समस्या है। कोई भी घटना या परिस्थिति जो व्यक्ति को असाधारण अनुक्रिया करने के लिए बाध्य करता है तनाव कहलाता है- घटनाएँ जैसे, भूकम्प, आगजनी, नौकरी छूट जाना, व्यवसाय का खत्म हो जाना, प्रियजनों की मृत्यु इत्यादि। ऐसे भौतिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय कारकों को जो तनाव उत्पन्न करते है, आसेधक कहा जाता है। मनोविज्ञानिको द्वारा कठिन परिस्थितियों में व्यक्ति द्वारा किये गये मनोवैज्ञानिक एवं दैहिक अनुक्रियायें जैसे-चिन्ता, क्रोध, आक्रामकता आदि एवं दैहिक अनुक्रियायें जैसे-पेट की गड़बड़ी, नींद न आना, रक्तचाप में वृद्धि आदि दिखलाता है तो हम कहते हैं कि व्यक्ति में तनाव उत्पन्न हो गया है।

विद्यार्थी देश के भविष्य है इनके स्वस्थ मानसिक विकास से देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है लेकिन यह बड़े दुख की बात है कि तनाव आज प्राय: विद्यार्थियों में बड़े पैमाने पर देखा जा सकता है। इस सम्बन्ध में **लेजारस** (1976) ने कहा कि तनाव तब पैदा होता है जब व्यक्ति अपनी जरुरतों को अपनी क्षमता से पूरा नहीं कर पाता है अवांछनीय परिवर्तन एवं परिवेश व्यक्ति पर दबाव उत्पन्न करते है और व्यक्ति उस पर नियंत्रण करने का प्रयास करता है जब दबाव क्षमता से ज्यादा हो जाता है तो व्यक्ति तनाव महसूस करता है यह दबाव की स्थिति तनाव कारक कहलाते है।

छात्रों में आत्महत्या वर्तमान परिदृश्य में चिन्तक विषयक समस्या बनती जा रही है विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा किये गये सर्वेक्षण के अनुसार, "विश्व में औसतन 1000 व्यक्ति प्रतिदिन आत्महत्या कर रहे है, जहाँ विकसित देशों मे यह दर प्रति 100000 की जनसंख्या पर 10 से 30 व्यक्ति है जहाँ विकासशील देशों में यह दर अपेक्षाकृत निम्न है।" आत्महत्या की यह प्रवृत्ति विशेष रुप से 12 से 15 तथा 17-19 वर्ष के आयु समूह में अधिक बढ़ रही है। शोध निष्कर्ष यह भी बताते है कि

किशोरावस्था में बालक इस प्रकार की घटनाओं में बालिकाओं की अपेक्षा अधिक लिप्त पाये गये । जब किसी व्यक्ति के अन्तर्मन में भावना व अहम् में संघर्ष होता है व उस संघर्ष का कोई हल नही निकल कर आता है तो व्यक्ति में भग्नाशा की स्थिति उत्पन्न हो जाती है जिसके फलस्वरुप हिंसा, आक्रोश, आत्मदाह अपराध जैसी प्रवृत्तियों का जन्म होता है। बढ़ती प्रतिस्पर्धा, भागदौड़ की जिन्दगी व आधुनिक जीवन के दवाब में स्थिति को विकट बना दिया है। जीवन-मृग-मरीचिका हो गया है। भागते-भागते मनुष्य कुंण्ठित हो जाता है, फलस्वरुप तनाव स्वाभाविक है।

1.1.1 शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन :-

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन के लिए दिशा-निर्देश का कार्य करती है। पिछड़ी जातियों का उन्नयन, राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास, भाषागत सुधार एवं प्रजातात्रिंक प्रणाली एवं व्यवस्थाओं का संगठन, प्रत्येक भाषा की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि देश की जनता कितनी शिक्षित है तथा वे परिवर्तनों को किस सीमा तक स्वीकार करती है। इस दृष्टि से शिक्षा हर सामाजिक परिवर्तनों के लिए परिवेश का निर्माण करती है।

सामाजिक परिवर्तन एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जो कि अवस्थानुसार मन्द या तीव्र दर से चलते हुए सम्पूर्ण सामाजिक संरचना एवं समाज के विभिन्न इकाईयों के कार्यों में विविधता उत्पन्न करती है, जैसे परिवारिक संरचना एवं नियमों में परिवर्तन। अनेक विचारकों ने इस तथ्य पर जोर दिया है कि शिक्षा की सामाजिक परिवर्तन में एक महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का एक साधन है तथा साथ ही शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का परिणाम भी है।

1.1.2 शिक्षा एवं शिक्षण कों प्रभावित करने वाले कारक :-

शिक्षा एवं शिक्षण में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। शिक्षण के बिना शिक्षा एक अनौपचारिक मात्र रह जाती है शिक्षण अनेक औपचारिक अध्यापन व्यवहारों तथा कौशलों का एक जटिल समन्वित रुप है। अध्यापन व्यवहार शिक्षक के वे समस्त क्रिया-कलाप है जिनका उपयोग उनके द्वारा अध्ययन-अध्यापन परिस्थिति में किसी भी विषयवस्तु को प्रस्तुत करते समय किया जाता है। इन्ही अध्यापन या शिक्षण व्यवहारों के विशिष्ट समूहों को ही शिक्षण कौशल कहते हैं। विभिन्न शिक्षण कौशलों के जटिल एवं समन्वित रुप को ही शिक्षण या अध्यापन-प्रक्रिया की संज्ञा दी गयी है। चूँकि इन क्रियाओं को अध्यापन के द्वारा विशेष पाठ्यक्रम को पढ़ाने के लिए शिक्षण परिस्थितियों में

सम्पादित किया जाता है। अत: अध्यापक, विद्यालय तथा पाठ्यक्रम सम्बन्धी कारकों के अतिरिक्त अधिगमकर्ता सम्बन्धी अनेक कारक भी अधिगम अध्यापन प्रक्रिया को प्रभावित करते है।

अधिगमकर्ता की बौद्धिक क्षमता, संसाधन, परिस्थिति, गृह सम्बन्धित या सामाजिक परिवेश भी शिक्षा एवं शिक्षण को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक है। साथ ही साथ अधिगमकर्ता के माता-पिता की आयु, स्वास्थ् , घर की स्थिति पारिवारिक स्थिरता एवं सुरक्षा की भावना तथा अध्यापन के प्रति अभिवृत्ति एवं महत्व का अवबोध, भाई-बहनों की संख्या, पारिवारिक आकार इत्यादि अनेक तत्व सम्मिलित है। परन्तु अध्यापकीय भूमिका को उचित ढ़ंग से अदा करने के लिए यदि अध्यापक को ही सबसे प्रमुख उत्तरदायी कारक माना जाय तो शायद अनुचित नही होगा, क्योकि एक सफल अध्यापक स्वयं ही इतना सक्षम है कि वह अन्य सभी कारकों को शिक्षण उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु व्यवस्थित कर शिक्षण को उन्नत एवं सफल बना सकता है ताकि विद्यार्थी अपने अधिगम लक्ष्य को पूरा कर सकें।

1.1.3 विद्यार्थी एवं सामाजिक परिवर्तन :-

सामाजिक परिवर्तन के सम्प्रत्यय को कई समाजशास्त्रियो ने अपने ढ़ंग से परिभाषित किया है। अपनी पुस्तक 'Human Society' में के. डेविस ने यह बताया है कि सामाजिक परिवर्तनों से तात्पर्य उन संशोधनों से है जो सामाजिक ढ़ाँचे में हुआ करते है। अत: प्राचीन काल मे हुए सामाजिक परिवर्तन की तुलना आधुनिक सामाजिक परिवर्तन से अधिक व्यापक है। चूँकि सामाजिक परिवर्तन आवश्यक भी है। प्रत्येक समाज सामाजिक परिवर्तन को अनिवार्य रुप से अंगीकृत करता है। इसके साथ ही साथ सामाजिक परिवर्तन का प्रभाव एक स्थान या समय विशेष पर ही न पड़कर अन्य स्थानों या समयों पर भी परिलक्षित होता है। ज्यों-ज्यों मानव समाज का विकास होता गया, ज्ञान के भंडार मे वृद्धि तथा विशिष्टिकरण भी होता गया और अध्यापक एवं छात्र की भूमिका में परिवर्तन होता गया पूर्वकाल में गुरु की आज्ञा का पालन करना ही विद्यार्थियों का एकमात्र परम कर्तव्य था, परन्तु आज के तर्क–प्रधान युग में भावनाओं के स्थान पर तर्क तथा उपयोगिता के मापदण्ड से शिक्षक का मूल्यांकन किया जाता है। अत: अध्यापकों के साथ-साथ विद्यार्थियों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

1.1.4 अध्ययन की आवश्यकता :-

विश्व में मानसिक तनाव बड़ी तीव्र गति सें बढ़ता जा रहा है इससे मानव जाति कुंठाग्रस्त होती जा रही है। तनाव के कारण छात्रों का सर्वागीण विकास अवरुद्ध हो रहा है छिन्न-भिन्न परिवार , निम्न सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियाँ, पारिवारिक तनाव, माता-पिता का असहयोगात्मक व्यवहार विविध, शारीरिक-सामाजिक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं व इच्छाओं की पूर्ती न हो पाना, जनरेशन गैप के फलस्वरुप जीवन-मूल्यों में अन्तर होना, आदर्शों का अभाव इत्यादि के फलस्वरुप ही छात्र-छात्राएँ मार्गदर्शन के अभाव में बन्धन की दीवारों को तोड़कर उस चौराहे पर खड़े हो जाते है जहाँ से शेष सभी राहे पतन की ओर जाती है तथा शैक्षिक उपलब्धि का स्तर भी घटता जा रहा है। आज देश के सभी राज्यों में स्थित विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं के अन्दर अपने जीवन-मूल्यों के प्रति उदासीनता बढ़ती जा रही है तथा स्वस्थ मानसिक विकास के प्रति भी उदासीन है जिससे उपलब्धि का स्तर घटता जा रहा है। अत: शोधकर्ता ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मानसिक तनाव को लेकर अध्ययन करना आवश्यक समझा ।

1.2 समस्या कथन:-

माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में मानसिक तनाव को तुलनात्मक अध्ययन ।

1.3 अध्ययन का उद्देश्य :-

1.माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के घर से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर अंतर ज्ञात करना ।

2.माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के समाज से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर अंतर ज्ञात करना ।

3.माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्कूल से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर अंतर ज्ञात करना ।

4.माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के व्यक्तिगत से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर अंतर ज्ञात करना।

1.4 अध्ययन की परिकल्पनाएँ:-

1.माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के घर से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर सार्थक अंतर नही है।

2.माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के समाज से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर सार्थक अंतर नही है।

3.माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत विद्यार्थियों के स्कूल से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर सार्थक अंतर नही है।

4.माध्यमिक विद्यालयों मे अध्ययनरत के विद्यार्थियों के व्यक्तिगत से सम्बन्धित मानसिक तनाव में लिंग भेद के आधार पर सार्थक अंतर नही है।

1.5 संचालनगत परिभाषा:-

माध्यमिक विद्यालय :

भोपाल जिले के केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालय जहाँ पर कक्षा 9वीं तथा 10 वीं की पढ़ायी होती है उसे माध्यमिक विद्यालय के रुप में सम्मिलित किया गया।

मानसिक तनाव :

तनाव से तात्पर्य हमारे मन और मस्तिष्क की उस हानिप्रद मनोवैज्ञानिक अवस्था से, है जिसका परिणाम हमें शारीरिक एवं मानसिक अवस्थता के रुप में भुगतना पड़ता है।

प्रस्तुत अध्ययन में मानसिक तनाव को चार आयामों घऱ, विद्यालय, समाज एवं व्यक्तिगत में प्रस्तुत किया गया।

1.6 अध्ययन का परिसीमन:-

व्यक्तिगत शोधकर्ता होने के नाते सामर्थ्य को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन का निम्नलिखित प्रकार से परिसीमन किया गया।

1.प्रस्तुत अध्ययन में भोपाल जिले के निजी विद्यालय का चयन प्रतिदर्श में किया गया।

2.केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 वीं एवं 10वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को शोध में सम्मिलित किया गया।

3.अध्ययन में तुलना हेतु 50 बालक एवं 50 बालिकाओं को लिया गया ।